कितना तेरा रहम था

कितना तेरा रहम था, कितनी तेरी दया थी |
अब भी वही कृपा है, अब भी वही दया है ||

जब मैं गिरा तूने हाथ बढ़ाया उठाने को |
जब भी गुमराह होने को था तूने कान पकड़ा समझाने को |
वो तेरा रहम था ये समझ न थी उस वक्त |
अब सोचता हूँ तूने ना किया होता ये एहसान तो |
घुट-घुट के जी रहा होता मरने को ||

मैं चाहूँ या ना चाहूँ पर तुमने सदा है चाहा |
भूला हूँ हर दफा तुझको तुझसे किया किनारा |
दुनिया में मस्त होके मस्ती बहुत सी की है |
उस झूठी माया से उबारकर मुझे कर दिया दिवाना |

माँ की तरह तुमने सदा ध्यान मेरा रखा |
कभी डाँटा कभी मारा कभी प्यार करके रखा |
गलती की तो भी तूने ना मुझसे मुँह फेरा |
उपदेश देकर मुझको दिखाया नया सवेरा ||